भा वि प्रा सी एस आर

- अध्यक्ष का संदेश
- भा वि प्रा सी एस आर के बारे में
- सी एस आर नीति
- परिपत्र/कार्यवृत्त/पत्र
- उदाहरण स्वरूप मामले
- स्वच्छ विद्यालय अभियान
- सी एस आर कार्यक्रम →
  - शिक्षा
  - स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं जल
  - कौशल विकास
  - पर्यावरण
  - मांग आधारित सामुदायिक कार्यक्रम
  - आपदा प्रबंधन
- पुरस्कार एवं प्रशस्तियां
- मीडिया विवरण
- संपर्क सूत्र

भा वि प्रा सी एस आर के बारे में

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अच्छे निगमित प्रशासन को प्राप्त करने, समाहित करने तथा सुदृढ़ करने की ओर लक्ष्यरत है जिसमें समाज और पर्यावरण के प्रति दायित्वपूर्ण व्यापारिक क्रियाकलाप हों जो वित्तीय लाभ के साथ ही सामाजिक कल्याण को भी साथ लेकर चलें ।
भा वि प्रा यह स्वीकार करता है कि इसके मूल क्रियाकलापों, जो हवाई अड्डों का निर्माण और संचालन है, के कारण अनैच्छिक परिणाम और प्रभाव हो रहे हैं या हो सकते हैं । इसके कार्य की प्रकृति के कारण प्राथमिक प्रभाव हवाई अड्डों के आस-पास के वातावरण और लोगों पर होता है । इसलिए सी एस आर के अंतर्गत हमारी प्रेरणा और लक्ष्य है – हमारे हवाई अड्डों के आस-पास के अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के लिए सशक्तिकरण के अवसर उत्पन्न करना जिससे सामूहिक विकास का वातावरण तैयार हो सके । भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (भा वि प्रा) की निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) नीति, भा वि प्रा की व्यावसायिक निष्पादन में उच्च मानक स्थापित करने की व्यापक प्रतिबद्धता के अनुरूप है । भा वि प्रा का ध्येय " विमान यातायात सेवाओं एवं हवाई अड्डा प्रबंधन में नेतृत्व करते हुए विश्वस्तरीय संगठन बनाना एवं 2016 तक एशिया प्रशांत क्षेत्र में भारत को एक प्रमुख केन्द्र बनाना है । "
इस नीति का निर्माण सार्वजनिक उद्यम विभाग, भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय द्वारा (एफ. नं. 15(3)/2007 –डीपीई (जी एम) जी-I-99 दिनांक 9 अप्रैल, 2010 के द्वारा) केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम हेतु निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व पर जारी दिशानिर्देशों के अनुसार किया गया है ।

वर्ष 2011-12 के दौरान कर पश्चात् लाभ का 2% सी एस आर पिरयोजनाओं हेतु रखा गया था । भा वि प्रा के सी एस आर कार्यों के केन्द्र बिन्दु निम्नलिखित हैं, परंतु केवल यहीं तक सीमित नहीं है :-

1. एकीकृत सामुदायित्व विकास जोकि सरकार के वैधानिक पुर्नवास एवं पुनस्थार्पना कार्यक्रमों की कमियों को दूर करे तथा हवाई अड्डा क्षेत्र के आस-पास के क्षेत्र के लोगों का जीवन स्तर पर बेहतर प्रभाव डाले ।
2. शिक्षा, जिसमें औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा शामिल है, व्यावसायिक प्रशिक्षण जिसका स्थाई आय के स्रोत उत्पन्न करने तथा स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है ।
3. जीवन के बेहतर गुणवत्ता हेतु स्वास्थ्य को एक अभिन्न अंग के रूप में देखना जिसमें महिलाओं व बालिकाओं पर विशेष ध्यान हो ।
4. आपदा प्रबंधन जिसमें तैयारी जिसमें तैयारी, क्षमता विकास तथा आपातकालीन प्रतिक्रिया भी शामिल है जिससे आपदा की स्थिति में भा वि प्रा की मूल क्षमता को बढ़ाया जा सके ।

सी एस आर गतिविधियों का भौगोलिक केन्द्र नए अथवा वर्तमान हवाई अड्डों के आस-पास के क्षेत्र हैं जो हवाई अड्डों से अधिकतम प्रभावित हैं, वह जिला कस्बा या शहर है जहां हवाई अड्डा स्थित है , तथा पूरा देश है जिससे आपातकालीन परिस्थितियों का मुकाबला किया जा सके और उच्च राष्ट्रीय लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें जिससे एमडीजी और पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र का ग्लोबल काम्पैक्ट कार्यक्रम शामिल है ।

सी एस आर नीति

1. निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व एवं धारणीयता हेतु निगमित संचार योजना को अंगीकार करना ।
2. केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम हेतु निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व हेतु दिशा निर्देश 01-04-2014
3. भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व नीति 2011
4. भा वि प्रा की निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व हेतु एन जी ओ/गैर लाभ वाले संगठन/शहरी विशेषज्ञ एजेन्सियों हेतु दिशा निर्देश ।
5. निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व –ध्येय, योजना व प्रतिबद्धता (पी पी पी)

उदाहरण स्वरूप मामले

सूची :

1. मनाली – वृत्त अध्ययन
2. स्वाधीनता हेतु समर्थ बनाना
3. सपने सच हुए- भा वि प्रा ने आशीष के लिए संभव किया
4. कठिनाईयों से भी मजबूत
5. आर्थिक आत्मनिर्भरता को सरल बनाना
6. स्थानांतरित जनसंख्या को संभालना
7. शिक्षा सुविधाओं तक पहुंचना बढाना

मनाली – वृत्त अध्ययन

अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी मनाली , मुंबई के एक छोटे से इलाके में रहती है। उसके पिता एक छोटे रेस्टोरेन्ट में दैनिक वेतन भोगी वेटर है तथा प्रति माह रू. 6000/- कमाते हैं । उनके साथ सबसे बुरा तब हुआ जब उसके पिता बीमार हो गए, उनकी तनख्वाह बंद हो गई तथा उनके पांच सदस्यों वाले परिवार का गुजारा चलाना मुश्किल हो गया ।

मनाली कहती है , "मेरे समाज की स्थिति बहुत खराब है और हम यहां से निकलना चाहते है यहां हमेशा लोग पड़ोसियों से झगड़ते रहते है।'' जीवन की इन चुनौतियों ने उसके संघर्ष को और मुश्किल बना दिया । उसने नौकरी के लिए बहुत से साक्षात्कार दिए लेकिन कंप्यूटर के ज्ञान की कमी और खराब संपर्क कला के कारण उसे सफलता नहीं मिली । इन सबके बीच उसके माता-पिता के प्रोत्साहन ने उसकी बहुत मदद की ।

उसने भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के कैरियर विकास केन्द्र के बारे में सुना । वह अपने क्षेत्र के दौरे पर आए हुए सामाजिक कार्यकर्ताओं से मिली । उन्होंने उसे पाठ्यक्रमों के बारे में बताया और उसे शाम को केन्द्र पर आमंत्रित किया ।

मनाली यह महसूस करती है कि पहले दिन से ही उसे यह पता चल गया था कि उसे कितना अधिक सीखना बाकी है । वाद-विवाद प्रतियोगिता, प्रेजेन्टेशन बनाना, निवंध लेखन प्रतियोगिता और कक्षा विचार विमर्श उसके प्रिय सत्र थे । मनाली जब केन्द्र के अन्य प्रशिशुओं और प्रशिक्षको से मिली तो उसका आत्मविश्वास और बढ गया । ''कस्टमर केयर सेवा प्रशिक्षण'' के बाद काफी मजबूत महसूस करने लगी । भा वि प्रा सी डी सी के वातावरण ने उसके जीवन में बदलाव ला दिया ।

मनाली अब वोडाफोन में कंप्यूटर डाटा एन्ट्री आपरेटर के रूप में कार्य कर रही है तथा 6500/- रूपए प्रतिमाह कमा रही है । वह भा वि प्रा कैरियर विकास केन्द्र से प्राप्त प्रशिक्षण तथा तैयारी के साथ अपने कैरियर को विकसित होता हुआ देख रही है ।

मुंबई में स्थित कैरियर विकास केन्द्र, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की एक नायाब पहल है जो मुंबई हवाई अड्डे के आस-पास की झुग्गियों में रह रहे बेरोजगार युवाओं के सशक्तिकरण पर केन्द्रित है । यह साल में लगभग 500 बेरोजगार युवाओं को रोजगारपरक कंप्यूटर प्रशिक्षण देता है तथा उन्हें रोजगार दिलाने में सहायता करता है । आज तक लगभग 120 युवा इसके द्वारा रोजगार प्राप्त कर चुके है ।

स्वीधीनता हेतु समर्थ बनाना

22 वर्षीय सलीमुनिशा कुरैशी ने अपनी बेरोजगार शादीशुदा मित्रों की दयनीय दशा को देखकर अपनी जिंदगी बदलने की ठानी "शादी होने के बाद उनकी हालत बहुत खराब थी । लेडीज को इज्जत तभी मिलती है जब वो किसी पर डिपेंड ना करें । मैं आगे बढ़ना चाहती हूँ, इतना सीखना चाहती हूँ कि मुझे नौकरी की कोई कमी ना रहे ।" उसके लिए सफलता की राह स्पष्ट थी । ''इंग्लिश और कंप्यूटर तो आना बहुत ही जरूरी है, इसके बिना आप कुछ नहीं कर सकते '' लेकिन उसने जितने भी पाठ्यक्रम के बारे में पता किया वे सभी उसकी पहुंच से बाहर थे । एक 12 सदस्यों वाले परिवार से ताल्लुक रखने वाली सीलमुनिशा ने पहले ही पैसों की तंगी के कारण अपने ग्रेजुएट बनने का सपना छोड़ दिया था ।

अपने टूटे हुए सपनों के बावजूद सलीमुनिशा ने एन आई आई टी फाडन्डेशन –भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एन एफ –एएआई) रोजगार केन्द्र की प्रवेश परीक्षा में असफल होने पर भी उम्मीद नहीं छोड़ी । इसका कारण था वहन करने योग्य पाठ्यक्रम शुल्क । उसका अंग्रेजी भाषा से बिल्कुल अंजान होना अब अचानक उसे एक संभावनायुक्त बाधा लगने लगी । उसने डेमो क्लास में भाग लिया और अपनी क्षमता के विकास हेतु केन्द्र पर बार-बार आती रही । अंकित

अग्रवाल, उसके साफ्ट स्किल प्रशिक्षक, जो प्रतिदिन सलीमुनिशा के साथ उसके स्वाधीनता के संघर्ष में उसके साथ थे , कहते हैं, "यह केवल उसका सीखने का निश्चय था जिसने हमें उसे भर्ती करने के लिए आश्वस्त किया ।" उसने तुरंत जॉइन कर लिया और धीरे-धीरे पर निश्चय के साथ सीखने लगी । सलीमुनिशा कहती है मेरे टेन्सेस इम्प्रूव हो गए है अंकित सर इतना डिटेल में पढाते हैं कि दो साल बाद भी नहीं भूलेगा । उसने एक स्थानीय टयूटोरियल में नौकरी कर ली और अब 4500/- प्रतिमाह कमा रही है । वह अब तनख्वाह में बढ़ोतरी की उम्मीद कर रही है, और जब यह हो जाएगा तो उसे अपनी ग्रेजुएशन शुरू होने की उम्मीद है। अंकित, जिन्होने अपने बहुत से विद्यार्थियों को एन एफ-एएआई में सपने पूरे करते देखा है कहते है "बहुत इम्प्रूव करना है, पर मेहनत करेगी तो सीख जाएगी " सलीमुनिशा भी कोई अपवाद नही है ।

सपने सच हुए – भा वि प्रा ने आशीष के लिए संभव किया

19 वर्षीय आशीष प्रजापति अपने चार सदस्यीय परिवार के साथ मुंबई की झुग्गियों में रहता है । परिवार की वित्तीय स्थिति बहुत खराब है जहां आशीष के पिताजी एकमात्र कमाने वाले सदस्य हैं जो प्रतिमाह लगभग 6000/- रूपए कमाते हैं ।

परिवार की कठिन वित्तीय स्थिति के कारण आशीष अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाया । फिर भी अपने लगातार कठिन परिश्रम और आत्मनिर्भर बनने की तीव्र उत्कण्ठा के कारण वह भा वि प्रा द्वारा हाल ही में स्थापित युवा रोजगार केन्द्र में पहुंचा गया । यह केन्द्र समाज के आर्थिक रूप से पिछडे वर्गों के लिए बेसिक कंप्यूटर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम करवाता है । अभी वह **"जॉब रेडिनैस ट्रेनिंग कोर्स"** कर रहा है तो 4 माह की अवधि का है । यह प्रशिक्षण तीन भागों में 8 माडयूल का है। इस प्रशिक्षणमें बेसिक कंप्यूटर कोर्स इंग्लिश स्पीकिंग, इंडस्ट्रियल ओवरव्यू, कस्टमर सर्विस, शिष्टाचार तथा ग्रूमिंग, कैरियर ओरियन्टेशन, तर्क क्षमता, बातचीत की कला आदि शामिल है ।

एक अच्छा विद्यार्थी होते हुए भी आशीष को वर्तमान परिस्थियों से अपनी राह बनानी पड़ी । अपनी राह में कठिनाईयों के बावजूद उसने पीछे मुड कर नहीं देखा । प्रशिक्षण से पहले तक अंग्रेजी उसके लिए दूर की कौड़ी थी । पूरी तरह से विशेषज्ञ न होने पर भी अब वह पहले से बेहतर अंग्रेजी जानता है । वह अपने प्रति इस सहयोग तथा धैर्य का श्रेय भा वि प्रा – एन आई आई टी युवा स्टार के प्रशिक्षकों को देता है । उसने स्टाफ के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट की । वह कहता है कि उन्होंने उसे बहुत कुछ सिखाया है । अपने दायित्व पूरी तरह निभाएं हैं । वह कहता है कि स्टाफ ने न केवल सही पाठ पढाए बल्कि उसके "क्यों" और "क्या" जैसे शुरूआती प्रश्नों के जबाव भी धैर्य से दिए ।आज आशीष पहले से एक पूरी तरह बदला हुआ इंसान है । अपनी कड़ी मेहनत की बदौलत उसने हाल ही में 12 वीं कक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण की है ।

इस पाठ्यक्रम के आशीष को उचित मार्गदर्शन और प्रशिक्षण दिया । भा वि प्रा –एन आई आई टी युवा स्टार के पाठ्यक्रम ने रोजगार पाने के मार्ग की उसकी सारी बाधाओं को दूर कर दिया । वर्तमान में वह फ्यूचर ग्रुप ऑफ कंपनीज में मार्केटिंग असिस्टेंट एक्जीक्यूटिव के पद पर कार्यरत है । भा वि प्रा की इस पहल के कारण उसका कठिन मार्ग सरल हो गया ।

कठिनाईयों से भी मजबूत

छ: सदस्यीय परिवार के सबसे बड़े बेटे समीर ने 4 साल पहले फूड पायजनिंग के कारण स्कूल छोड़ दिया। परिवार की सारी जमापूंजी उसके ईलाज में खर्च हो गई और तब से उसके पिता की 3000/- रूपए की मासिक तनख्वाह मुंबई जैसे शहर में गुजारे के लिए कम पड़ने लगी ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (भा वि प्रा) द्वारा प्रयोजित युवा रोजगार केन्द्र जोकि समीर की बामनवाडा बस्ती के पीछे एन आई आई टी फाउन्डेशन (एन एस) कोर्स चलाता है, में हमारी समीर से मुलाकात हुई । पहली बार केन्द्र में मैले-कुचैले कपड़ो और ठेठ मुंबईया भाषा के साथ आए समीर का लक्ष्य स्पष्ट था । "इंग्लिश कंप्यूटर सीखने का है, कुछ कमाना चाहता हूं ।" शायद उसकी शैय्याग्रस्त मॉ की स्थिति या परिवार का आर्थिक संघर्ष उसके लिए बाधक नहीं थे क्योंकि अंग्रेजी का एक शब्द भी न जानने के बावजूद उसने हमें प्रशिक्षण में उसे नामित करने के लिए आश्वस्त कर लिया ।

आशुतोस, एन एफ केन्द्र प्रबंधक अपने हाथ में लिए गए उस कार्य की विकटता को समझता था लेकिन कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ, "मैने उसे मोबिलाइजेशन पर लिया, उसे हर छोटी बात पर परामर्श दिया, मैने अपनी ओर से कड़ी मेहनत की, लेकिन हैरान करने वाली बात यह थी कि उसने इन प्रतिपुष्टियो और सुझावों पर कितनी शीघ्रता से अमल किया । " समीर की बोलने की शैली एकदम बदल गई और किसी को पता नहीं चला कि कब "अपुन" "आप" में बदल गया और केवल 2 ही महीनों में वह औपचारिक कपड़ों में आने लगा । हांलाकि, समीर को पता था कि अंग्रेजी पर पकड़ बनाने में समय लगेगा । उसने आगे बढ़कर एन एफ में मोबिलाइजर के रूप में पार्ट टाइम नौकरी हेतु आवेदन किया और काम के बाद नए विद्यार्थियों को प्रारंभिक स्तर की अंग्रेजी में सहायता करते हुए उनके साथ स्वयं भी सीखने लगा । समीर ने अब 10 वीं पास कर ली है और 12 वीं के परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा है । उससे यह पूछे जाने पर कि वह इतना समर्पित कैसे है, उसने कहा, "नार्मल इंस्टीट्यूट सिखाते नहीं है सिर्फ बताते हैं , यहां सही काम क्यों करना है ये सिखाते हैं," उसके साथी और टीचर उसकी तरक्की को ऐसे बताते हैं , "समीर अब बस्तीवाला नहीं लगता । उसमें बहुत बदलाव आया है ।" हालांकि समीर अभी भी उपनी अंग्रेजी सुधार रहा है, फिर भी वह एक जिम्मेदार युवक बन गया है । अपनी पहली तनख्वाह से अपने दोस्तों को पार्टी देने की बजाय समीर ने पूरा पैसा अपनी मॉ को दिया । भा वि प्रा की टूल-किट की मदद से एन एफ मुबई के ऐसे बहुत से समीरों को कठिनाइयों से भी मजबूत बनाने के लिए तैयार

कर रहा है, विशेषत: उन्हें यह बताकर कि सही काम क्यों करें ।

आर्थिक आत्म निर्भरता को सरल बनाना

अपने परिवार का एकमात्र कमाने वाला सदस्य होने के कारण मैने अपने पांच लोगों के परिवार के गुजारे के लिए दिन-रात मेहनत करके बड़ी मुश्किल से पैसा कमाने के लिए संघर्ष किया । आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि जिंदगी पहले से आसान हो गई है और इसके लिए मैं भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण का बहुत आभारी हूँ कि उसने मुझे तरक्की का अवसर प्रदान किया । 40 वर्षीय बाबूलाल मीना ने विषम आर्थिक परिस्थितियों के चलते रोजगार की तलाश में राजस्थान का अपना छोटा सा गांव छोड़ दिया । उसके पिता आठ सदस्यीय परिवार में एकमात्र कमाऊ सदस्य थे, उन्होंने पाया कि घर की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए हर महीने आने वाली तनख्वाह पर्याप्त नहीं है । अपने कंधों पर समयपूर्व जिम्मेदारी का बोझ उठाए बाबूलाल ने अपने परिवार की अच्छी देखभाल के लिए पैसा कमाने के लिए नौकरी की तलाश में गांव छोड़ दिया । पेपर रिसर्च संस्थानों से कुछ अल्पकालिक पाठ्यक्रमों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ बाबूलाल ने नौ साल का अनुभव अर्जित कर लिया । आज बाबूलाल ''रंगपुरी'' दिल्ली में पेपर रिसाइक्लिंग एवं स्टेशनरी इकाई में काम करता है ।

" मैं उन गिने-चुने सौभाग्यशाली लोगों में से हूँ जो इस पेपर रिसाइक्लिंग इकाई की स्थापना के समय से यहां पर हैं । यह 2009 में शुरू हुई थी और पिछले तीन वर्षों से मैंने इसके साथ तरक्की की है और मैं किसी ऐसी चीज के साथ जुड़ा हूँ जो अच्छी और अलग है तथा जो पर्यावरण हितैषी उत्पाद बनाकर अच्छी सेवा कर रही है । यह अनुभव हम सबके लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध हुआ है "

स्थानांतरित जनसंख्या की संभावना

" मुझे अभी भी वह समय याद है कि जब मैं महिपालपुर कालोनी में झाड़ू लगाती थी और प्रतिमाह 1000-1500/- रूपए कमाती थी जिससे अपने परिवार के लिए पैसे बचाना बहुत मुश्किल था । आज के हालात पहले से बेहतर है और इसका सारा श्रेय भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को जाता है । मैं बहुत खुश हूँ कि मैं समाज के लिए कुछ बेहतर कर रही हूँ ।

यू पी के छोटे से जिले कासगंज की 35 वर्षीया रेखा ने जब अपना गांव छोड़ा उस समय उसकी उम्र 15 वर्ष थी । उसका पति कोयला खदान में मजदूर था और उसने लगभग 12 सालों तक घरेलू नौकरानी का काम किया । जब रंगपुरी में पेपर रिसाइक्लिंग इकाई की शुरूआत हुई तो वह कल्याणमयी के साथ जुड़ने वाली पहली महिला थी । " आज मैं कह सकती हूँ कि स्थिति अच्छी नहीं है क्योंकि अभी भी कोई बचत नहीं हो पा रही है लेकिन फिर भी मेरे संघर्षपूर्ण अतीत से बेहतर है। "

भा वि प्रा और कल्याणमयी का शुक्रिया कि मैं प्रोविडेन्ट फन्ड स्कीम और ई.एस.आई. के रूप में भविष्य के लिए कुछ बचा पा रही हूँ । मैं प्रतिदिन 270/- रूपए कमा रही हूँ और मेरे 3 बेटों और 2 बेटियों के बेहतर भविष्य की कामना कर रही हूँ । मैं यहां पर प्रोडक्ट डिविजन में काम करती हूँ जहां का कामकाजी वातावरण बहुत अच्छा है और मैं हमेशा इस बात से अच्छा महसूस करती हूँ कि हम सब मिलकर एक इकाई के रूप में ऐसे उत्पाद बना रहे हैं जो पर्यावरण हितैषी और प्रदूषण मुक्त हैं ।

शिक्षा सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाना

गुरूंग मोड से डिकलिंग सीनियर सैकन्डरी स्कूल का मार्ग 2 कि.मी लंबा पहाड़ी पर चढाई का रास्ता है । इस दूरी के बीच लगभग 10 मकान हैं । गांव वालों के लिए आस-पास कोई भी गाड़ी चलने योग्य सड़क नहीं है । उन्हें सड़क तक पहुचने के लिए लगभग 2 कि.मी स्वयं द्वारा निर्मित कच्चे फुटपाथ पर चलना पड़ता है । विद्यार्थियों और वरिष्ठ नागरिकों को इस कच्चे फुटपाथ पर विशेषत: मानसून के दौरान चलने में बहुत कठिनाई होती थी । लेकिन भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को धन्यवाद कि उनके निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) कार्यक्रम के अंतर्गत गुरूंग मोड़ से डिकलिंग सीनियर सैकन्डरी स्कूल तक 2 कि.मी लंबे सी.सी. फुटपाथ का निर्माण किया गया । कार्य दिनांक 16 सितंबर, 2011 को शुरू हुआ और 15 जनवरी, 2012 को समाप्त हुआ । इससे ग्रामीणों और विद्यार्थियों को बड़ी राहत मिली है । अब उन्हें इस सी.सी. फुटपाथ पर चलने में कोई परेशानी नहीं होती और वे अपने गंतव्य तक समय पर सुरक्षित रूप से पहुंच जाते है ।

पूनम छेत्री, (36) एक गृहिणी एवं 3 सालों से गठिया रोग से ग्रस्त को अपनी जाँच के लिए अस्पताल जाने में परेशानी हुआ करती थी क्यों कि उनका घर मोटर योग्य सड़क के आस-पास नहीं था। उन्हें सड़क तक पहुँचने के लिए इस कच्चे फुटपाथ पर चलना पड़ता था। इस फुटपाथ पर चलते समय हर बार उन्हें बहुत परेशानी होती थी क्योंकि पैरों में तकलीफ की वजह से वे उस पर आराम से चल नहीं पाती थीं। कई बार वे इस गीली मिट्टी वाले फुटपाथ पर फिसल कर गिर भी चुकी थीं। इसलिए अस्पताल जाते समय हमेशा उन्हे एक परिचारक की आवश्यकता पड़ती थी जो उन्हें अस्पताल तक ले कर जाता था। अब सीमेंट कंक्रीट का फुटपाथ बन जाने पर वह अपनी जाँच के लिए, अकेले ही अस्पताल चली जाती हैं। इस फुटपाथ से पूनम छेत्री की ही तरह दूसरे मरीजों को भी फायदा हुआ। अब वे आराम से इस पर चल सकते थे।

पूजा छेत्री (16), डिक्लिंग वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की कक्षा IX की छात्रा का हाथ कच्चे फुटपाथ पर चलते समय गिरने की वजह से टूट गया। उस दिन को याद करते हुए वह कहती है "जुलाई का महीना था और बारिश हो रही थी। मुझे विद्यालय के लिए विलम्ब हो रहा था। कच्चे फुटपाथ पर कीचड फैला था लेकिन मैं हर हाल में जल्द से जल्द विद्यालय पहुँचना चाहती थी अतः मैंने फुटपाथ पर अधाधुंध चले जा रही थी। अचानक मेरा बायां पैर फिसल गया और मैं नीचे गिर पड़ी, खुद को सम्भालने के लिए मैने अपने दोनो हाथों का प्रयोग किया परन्तु दुःर्भाग्यवश मैं खुद को ठीक से सम्भाल न सकी तथा और मेरा बायां हाथ टूट गया" आगे वह बताती है कि कंक्रीट-सीमेंट का फुटपाथ बन जाने के बाद अब वह समय से विद्यालय पहुँच जाया करती है तथा मानसून के मौसम में भी अब उसे कोई दिक्कत नहीं होती।

छबिलाल बैसनेट (66) लोवर डिक्लिंग के एक स्थानीय निवासी भी कहते हैं कि कंक्रीट-सीमेंट का फुटपाथ बन जाने से उनका जीवन कई प्रकार से आरामदायक बना है जैसे कि अपने कार्यों के लिए बाजार जाने में तथा बीमार लोगों को अस्पताल लेकर जाने में। श्री बैसनेट कहते हैं "पहले इस कच्चे फुटपाथ पर चलने में हमें बहुत परेशानी हुआ करती थी तथा बीमार लोगों को अस्पताल तक पहुँचने के लिए हमें स्ट्रेचर का प्रयोग भी करना पड़ता था लेकिन अब हमें ऐसी कोई परेशानी नहीं है। हालांकि हमारे गाँव में कोई सड़क नहीं है परन्तु कंक्रीट-सीमेंट के इस फुटपाथ ने कम से कम सड़क जैसी सुविधा प्रदान कर दी है"

स्वच्छ विद्यालय अभियान

1. भाविप्रा सी एस आर के अंतर्गत स्वच्छ विद्यालय अभियान
2. स्वच्छ भारत के लिए सी एस आर कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय में बालिका शौचालयों का निर्माण-स्वच्छ विद्यालय अभियान।
3. भाविप्रा, निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व नई योजना-बालिका शौचालयों का निर्माण-प्रगति रिपोर्ट।
4. छात्राओं के लिए विद्यालयों में बन कर तैयार शौचालयों का मीडिया कवरेज।
5. छात्राओं के लिए विद्यालयों में निर्माणाधीन शौचालयों पर एक नजर।
6. छात्राओं के लिए विद्यालयों में बन कर तैयार शौचालयों पर एक नजर।
7. छात्राओं के लिए विद्यालयों में बन कर तैयार शौचालयों पर एक नजरः कोलकाता, पश्चिम बंगाल
8. छात्राओं के लिए विद्यालयों में निर्माणाधीन शौचालयों पर एक नजरः कोलकाता, पश्चिम बंगाल।

शिक्षा

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र, आयुधाम, नजफगढ़

आयुधाम वरिष्ठ नागरिकों के साथ-साथ वंचित समुदाय के बच्चों के लिए घर का एकीकृत मॉडल है। आयुधाम के बच्चों को कम्प्यूटर की बुनियादी शिक्षा की सुविधा प्रदान करने तथा यहाँ के वरिष्ठ नागरिकों को मनोरंजन की सुविधा देने के उद्देश्य से भाविप्रा ने वहाँ एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की है। इस परियोजना के अंतर्गत 20 कम्प्यूटरों एवं उपकरणों के लिए कुल 7,10,000/- रु का व्यय हुआ है।

भीमपुर विद्यालय, भुवनेश्वर में शैक्षिक अवसंरचना में सुधार करना

यह परियोजना भुवनेश्वर हवाई अड्डे के बिलकुल समीप स्थित भीमपुर प्राथमिक विद्यालय के नवीनीकरण एवं अनुरक्षण से संबंधित है। इस विद्यालय की स्थापना वर्ष 1989 में हुई थी। इस विद्यालय के भवन का निर्माण उड़ीसा सरकार के भुवनेश्वर नगर निगम सर्व शिक्षा अभियान द्वारा किया गया। वर्ष 2012-13 के दौरान इस विद्यालय में 62 छात्रों तथा 65 छात्राओं का नामांकन हुआ था।

भाविप्रा ने इस विद्यालय में दो शौचालय उपलब्ध कराए हैं जिसमें से एक छात्रों तथा एक छात्राओं के लिए है तथा ग्रिल्स लगाकर मुंडेर की ऊंचाई 2 फीट से बढ़ाकर 6 फीट करवाया एवं विद्यालय में डेस्क भी उपलब्ध कराए तथा विद्यालय के नवीनीकरण का कार्य भी भाविप्रा द्वारा किया गया। यह परियोजना वित्तीय वर्ष 2013-14 में पूर्ण हुई तथा इस पर कुल 11.31 लाख रु का खर्च आया।

परियोजना ई-शिक्षा-डिजिटल कक्षा परियोजना, मुंबई हवाई अड्डे के पास

एयरपोर्ट हाई स्कूल, मुंबई हवाई अड्डे के निकट स्थित है। भाविप्रा न्यू एयरपोर्ट कॉलोनी के आस-पास के झुग्गी-झोपड़ी बस्तियों के करीब 2500 छात्र इस विद्यालय में नर्सरी से XII तक की शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन छात्रों में से अधिकतम छात्र समाज के आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग के हैं। अंग्रेजी, विज्ञान एवं गणित के विषयों में इन छात्रों का प्रदर्शन सुधारने की सुविधा प्रदान करने के लिए भाविप्रा ने यहाँ ई-शिक्षा परियोजना की शुरुआत की है। इस परियोजना में विद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुसार डिजिटल एनीमेशन का प्रयोग एवं अध्यापक प्रशिक्षण शामिल हैं। इस परियोजना के अंतर्गत महाराष्ट्र बोर्ड पाठ्यक्रम के अनुसार डिजी क्लास हार्डवेयर सॉफ्ट-वेयर अर्थात डिजिटल कंटेंट पोर्टफोलियो तथा अध्यापक प्रशिक्षण उपलब्ध कराए जाते हैं। इस परियोजना पर कुल 2 लाख रुपए खर्च किए गए।

सेंट थॉमस माउंट पंचायत यूनियन प्राइमरी स्कूल, कोल बाजार, चेन्नई हवाई अड्डे के समीप, तमिलनाडू में अतिरिक्त सुविधाओं का प्रावधान।

चेन्नई हवाई अड्डे के विस्तार के समय इस विद्यालय के पास के क्षेत्र को विभिन्न वेंडरों द्वारा फैब्रीकेशन याई, बैचिंग प्लाट, हाट मिक्स प्लांट इत्यादि की स्थापना के लिए उपयोग में लाया गया। इस अवधि के दौरान विद्यालय का पर्यावरण भी प्रभावित हुआ। विद्यमान विद्यालय जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था तथा इसकी मरम्मत एवं अनुरक्षण किए जाने की आवश्यकता थी तथा अतिरिक्त सुविधाएं दिए जाने की भी जरुरत थी। इस परियोजना के अंतर्गत भाविप्रा ने दो कक्षाओं , पुस्तकालय एवं एक टॉयलेट ब्लाक के निर्माण का कार्य तथा विद्यमान भवन की मरम्मत का कार्य किया। परियोजना के अंतर्गत कुल 44.46 लाख रु खर्च किए गए।

महाराष्ट्र के जलगाँव हवाई अड्डे के समीप स्थित विद्यालयों में अतिरिक्त सुविधाएँ

जलगाँव हवाई अड्डे के लिए भूमि अधिग्रहण की वजह से प्रभावित हुए गाँवों के विद्यालयों में सुविधाओं के विकास के लिए भाविप्रा ने सी एस आर परियोजनाओं का कार्यान्वयन किया। ये सुविधाएँ जलगाँव के नशिराबाद एवं कुशुम्बे गाँवों के विद्यालयों में उपलब्ध कराई गई। इस परियोजना के अंतर्गत प्रत्येक विद्यालय के लिए एक शौचालय ब्लॉक तथा कम्प्यूटरों की सुविधा प्रदान की जा रही है। इस परियोजना के अंतर्गत कुल 10 लाख रु खर्च किए जा रहे हैं।

कोलकाता हवाई अड्डे के पास दो नए विद्यालय भवन का निर्माण

भाविप्रा ने कोलकाता हवाई अड्डे के निकट जेस्सोर रोड-कैरवाली रोड के बिलकुल पास दो नए विद्यालय भवनों के निर्माण का कार्य किया। इनमें से पहला है दम दम एयरपोर्ट हाई स्कूल (बंगाली माध्यम) तथा दम दम एयरपोर्ट हिन्दी हाई स्कूल। हिन्दी ब्लॉक में कुल 23 कमरे तथा बंगाली ब्लाक में कुल 19 कमरे, कोलकाता में भाविप्रा की भूमि पर बनवाए गए। प्रत्येक ब्लॉक में अलग कम्प्यूटर कक्ष, पुस्तकालय सभा कक्ष, प्रयोगशालाएँ, शौचालय, भंडार कक्ष, अध्यापक कक्ष आदि मौजूद हैं। इस चार मंजिले भवन का कुल क्षेत्र 4012 वर्ग मीटर है। विद्यालय की वास्तुशिल्पीय योजना भाविप्रा द्वारा खुद तैयार की गई। विद्यालय भवन का निर्माण मार्च 2013 में कुल 8.80 करोड़ रु की लागत से पूरा किया गया।

शिक्षा सुविधाओं तक पहुँच में सुधार

शिक्षा सुविधाओं तक बच्चों की पहुँच को सुनिश्चित करना सी एस आर के अंतर्गत हमारे लक्ष्यों में से एक है।

सिक्किम के पेक्योंग में नए ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों के करीबी गाँवों के बच्चों को विद्यालय आने जाने के लिए कच्चे रास्ते का प्रयोग करना पड़ता था जो बहुत लम्बा था, फिसलन से भरा था तथा बरसात के मौसम के दौरान आवागमन में बाधा उत्पन्न करता था।

भाविप्रा ने पेक्योंग में (1350 मी. x 1.2 मी.) का कंक्रीट का फुटपाथ बनवाया ताकि पेक्योंग के दो स्थानों से डिक्लिंग स्कूल तक आवागमन सुगम हो सके एवं रास्ते में सुधार हो सके। इस परियोजना से 2500 से भी अधिक स्थानीय समुदाय के लोगों को फायदा होने जा रहा है जिसमें डिक्लिंग विद्यालय के छात्र तथा अध्यापक शामिल हैं।

चूंकि सिविल कार्य हमारे कार्य-व्यापार का प्राकृतिक उपसाहय है अतः परियोजना आउटपुट की गुणवत्ता को बहुत ऊंचे मानक तक बना के रखा गया। इसके अलावा इस परियोजना ने स्थानीय समुदाय के लोगों की आवश्यकताओं को भी पब्लिक साझेदारी के माध्यम से उल्लेखनीय रुप से दूर किया जो कि धारणीय एवं अनुकरणीय है।

उपरोक्त के अलावा हमारे हवाई अड्डों के निकटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले समाज के वंचित वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा संबंधी सुविधाओं को उन्नत करने के लिए भी भाविप्रा ने विभिन्न परियोजनाओं की शुरुआत की। 1850 विद्यार्थियों एवं 60 अध्यापकों को लाभ पहुँचाने एवं अवसंरचना संबंधी सुविधाएं प्रदान करने के लिए कोलकाता में हिन्दी एवं बंगाली माध्यम के विद्यालय हेतु नए विद्यालय भवनों का निर्माण तथा 10,500 से भी अधिक विद्यार्थियों को औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए सम्पूर्ण देश में लगभग 21 विद्यालयों को सहयोग प्रदान करना सी एस आर के अंतर्गत भाविप्रा के शिक्षा संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

स्वास्थ्य स्वच्छता एवं जल

राजस्थान के पिछड़े जिले उदयपुर में चलने-फिरने में अपंग व्यक्तियों के लिए दोष निवारक सर्जरी

भाविप्रा ने अपने सी एस आर कार्यक्रम के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर, राजस्थान के सहयोग से 500 पोलियोग्रस्त एवं जन्मजात विकलांग बच्चों की निःशुल्क सर्जरी में सहयोग प्रदान किया। संगठन पोलियो ग्रस्त लोगों के उपचार एवं उनके पुनर्वास के क्षेत्र में निःशुल्क सेवाएँ प्रदान कर रहा है। आपरेशन के बाद मरीजों को निःशुल्क मदद एवं उपकरण प्रदान किए जाते हैं ताकि वे शारीरिक रुप से चल-फिर सकें एवं उनका पुनर्वास हो सके। बाद में उन्हें आर्थिक पुनर्वास की सुविधा भी प्रदान की जाती है। पोलियो एवं सेरिब्रल पाल्सी भारत में चलने-फिरने में अपंगता के दो प्रमुख कारण हैं। पोलियो से ग्रस्त बहुत सारे बच्चे देश के विभिन्न भागों में ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी क्षेत्रों में रह रहे हैं। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर, की वजह से तथा राज्य/जिले के अस्पतालों में एक समान सर्जिकल सुविधाओं सहित व्यापक पुनर्वास सेवाएँ उपलब्ध न होने के कारण ऐसे बच्चों की एक बड़ी संख्या अब भी शारीरिक विकलांगता के साथ रह रही है। लाभ प्राप्त करने वाले मरीज नारायण सेवा संस्थान में प्राथमिक रुप से दोष निवारक सर्जरी के लिए आए थे। ये सभी लोग किसी ने किसी रुप में चलने-फिरने की अपंगता से पीड़ित थे। भाविप्रा ने अपने सी एस आर कार्यक्रम के अंतर्गत पोलियो एवं जन्मजात विकलांगता से ग्रस्त 500 लोगों की दोष निवारक सर्जरी करने की परियोजना प्रारम्भ करने पर विचार किया क्योंकि प्रस्तावित पहल, पिछड़े जिले उदयपुर से संबंधित है, जो कि वित्तीय वर्ष 2013-14 के लिए भाविप्रा द्वारा गोद लिया हुआ जिला है। यह परियोजना 31 जनवरी 2014 को पूर्ण हुई। इस परियोजना की लागत 17 लाख रु थी।

त्रिवेन्द्रम में शारीरिक रुप से विकलांग लोगों के लिए 20 मोटर चालित साइकिलों का प्रावधान

केरल के अलाप्पुझा जिले में भाविप्रा ने अपने सी एस आर कार्यक्रम के अंतर्गत चलने-फिरने की अपंगता से ग्रस्त व्यक्तियों को मोटर चालित तिपहिया साइकिलें प्रदान करने की परियोजना प्रारम्भ की। यह जिला तिरुवनंतपुरम एवं कोची अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के बीच में स्थित है। चूंकि इस जिले में चलने-फिरने की अपंगता से ग्रस्त व्यक्तियों की संख्या बहुत ज्यादा है अतः पिछले 2-3 वर्षों के दौरान कुछ सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने मोटरचलित तिपहिया साइकिलें प्रदान करके ऐसे लोगों की सहायता की है। इस परियोजना की कुल लागत 13,00,000/- रु थी।

इस परियोजना को भाविप्रा त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डे द्वारा जिला प्राधिकरण/स्थानीय सरकारी निकायों के सहयोग से कार्यान्वित किया गया। उक्त तिपहिया साइकिलों के लाभार्थी उचित स्थानीय सरकारी प्राधिकारी द्वारा सरकारी मानकों के अनुसार विकलांग व्यक्तियों के रुप में प्रमाणित किए गए हैं।

चिकित्सा शिविर

समाज के सबसे निचले स्तर से लेकर पद दलितों के लिए उन्नत निवारक उपायों के माध्यम से एक स्वस्थ समाज के निर्माण के उद्देश्य को पूरा करने के लिए भाविप्रा प्रत्येक तिमाही में चिकित्सा शिविरों का आयोजन करता है जिसमें बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं और उपलब्ध कराई गई चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठाते हैं।

इसी प्रकार की पाछे गाँव की निवासी एक 38 वर्षिय महिला लीला छेत्री, जो घरेलू नौकरानी के रुप में काम करती है तथा उनकी आय इतनी कम है कि उनका परिवार अपनी रोजाना की जरुरतें बहुत मुश्किल से पूरी कर पाता है, हमारे चिकित्सा शिविर मे अपने दैनिक वेतन भोगी मजदूर पति के साथ तीन बार आई। उसके पेट में चिरकालिक समस्या थी। हमारे योग्य चिकित्सकों के दल ने उसका समुचित ढंग से परीक्षण किया तथा उसे अपेक्षित दवाएँ एवं एक्स रे तथा खानपान संबंधी सलाह दी जिससे उसे पूरी तरह से ठीक हो जाने में मदद मिली उसकी कमजोरी दूर करने के लिए भी कुछ सप्लीमेंट दिए गए। उसकी 8 वर्षिय बेटी बिंदु छेत्री, जो कम भूख लगने एवं बुखार से पीड़ित थी, की भी समुचित रुप से जांच की गई एवं उसे उचित दवाएँ प्रदान की गई जिसमें सप्लीमेंट विटामिन एवं वॉर्म ट्रीटमेंट शामिल हैं।

नोरकिट लेपचा नामक एक 13 वर्षीय किशोरी जिसका संबंध दक्षिण सिक्किम के लिंगी गाँव से है, और अब उस स्थानीय परिवार के साथ पेक्यांग में रहती है जिसने पिछले छः सालों से उसे गोद लिया हुआ है, इस शिविर में आई। उसके पैर में स्किन एलर्जी थी। इस किशोरी को शिविर में जांच की सुविधा तथा दवाएँ उपलब्ध करवाई गई और इससे वह पूरी तरह से ठीक हो गई। उसके अनुसार यह शिविर उसके लिए वरदान साबित हुआ।

स्वास्थय संबंधी देखभाल, शुद्ध पेय जल तथा बेहतरीन साफ-सफाई की सुविधाओं तक पहुँच में सुधार

नया स्वास्थय केन्द्र पेक्योंग, सिक्किमः भाविप्रा की सी एस आर नीति से दिशा-निर्देशित यह परियोजना स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित की गई। पेकयोंग, सिक्किम में ग्रीन फील्ड हवाई अड्डे के बनने की वजह से यहाँ के स्थानीय लोग बहुत प्रभावित हुए थे। इस परियोजना के मुख्यतः दो भाग थे जिन्हें पेक्योंग के स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किया गया था। पेक्योंग स्वास्थय केन्द्र, पेक्योंग कस्बे के 25 कि0मी0 के क्षेत्र के अंदर रहने वाले करीब 14,000 लोगों को सातों दिन चौबीसों घंटे उन्नत चिकित्सा सुविधाएँ एवं आपातकालीन चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा है तथा ग्रामीण जलपूर्ति परियोजना से लॉसिंग एवं डिक्लिंग गाँवों के 2400 लोगों को पेय जल की सुविधा अगले 30 सालों तक प्राप्त होती रहेगी।

ग्रामीण के लिए पीने योग्य पानी परियोजना, सिक्किम

पेक्यांग में नए हवाई अड्डे के निर्माण के कारण स्थानीय समुदाय जन सुविधाओं पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण ग्रामीण जल आपूर्ति परियोजना की आवश्यकता महसूस हुई । इस योजना से रु.39.90 लाख की लागत से 2400 लोगों की जनसंख्या, डिक्लिंग उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा मठ को 30 वर्षों की अवधि हेतु पीने योग्य पानी उपलब्ध कराने हेतु बनाई गई है । ग्रामीण जल आपूर्ति परियोजना में 10,000 लि. क्षमता के तीन टैंक, 5000 लि. के पाँच

टैंक तथा 2000 लि. के दो टैंक शामिल हैं । हवाई अड्डे के पास के इन गांवों सहित बड़े क्षेत्र तक पीने योग्य पानी की आपूर्ति की कठिनाइयों को यह परियोजना दूर करेगी ।

गोंदिया हवाई अड्डा, महाराष्ट्र के निकट सामुदायिक शौचालय

गोंदिया हवाई अड्डे के निकट बिरसी गांव में रहले वाले लगभग 800 निवासियों हेतु भाविप्रा ने सामुदायिक शौचालय ब्लॉक के निर्माण कार्य किया है । इस परियोजना के अंतर्गत छह शौचालय तथा चार स्नानघर के दो शौचालय के ब्लॉक बनाए गए हैं । नियमित रखरखाव, सामुदायिक स्वामित्व तथा इस परियोजना की पोषणीयता को सुनिश्चित करने के लिए बिरसी ग्राम पंचायत को समझौता ज्ञापन के माध्यम से सौंपा इसे गया है ।

चिकित्सा मोबाइल इकाई

स्वास्थ्य विभाग, सिक्किम सरकार के सहयोग से लागू भाविप्रा की निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व की यह अन्य महत्वपूर्ण योजना है । यह चिकित्सा मोबाइल इकाई अत्याधुनिक चिकित्सा नैदानिक सुविधाओं से सज्जित है जो सिक्किम के पेक्योंग जिले के दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले 600 लोगों की प्रति माह चिकित्सा आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी । यह चिकित्सा मोबाइल इकाई उच्च गुणवता के तकनीकी अत्याधुनिक नैदानिक तथा उपचार सुविधाओं से सज्जित है जिसमें सेमी ऑटो एनेलाइजर, पोर्टेबल ईसीजी मशीन, वैक्सीन केरियर, बी पी जॉच किट, बाइनोकूलर माइक्रोस्कोप, ग्लूकोमीटर, हैमाम्लोबोमीटर, श्वासजॉच मीटर आक्सीजन सपोर्ट प्रणाली इत्यादि शामिल हैं । इसमें डाक्टर के चैंबर, रोगी जॉच कक्ष, रसायन शौचालय, पी ए प्रणाली रोगियों हेतु प्रतिक्षालय क्षेत्र भी शामिल हैं ।

हवाई अड्डा स्थल के आसपास रहने वाले समुदायों की उत्तम गुणवत्ता की स्वास्थ्य सुविधाएं तथा जीवन में सुधार की बढ़ोत्तरी की दिशा में यह भाविप्रा की सीएसआर कटिबद्धताओं का एक महत्वपूर्ण मॉडल है ।

उन्नत स्वच्छता सुविधाएं

अच्छी स्वस्थ्यकर आदतों को अंगीकर करने से डायरिया संक्रमण की रोकथाम की जा सकती है तथा स्वस्थ समुदाय के लिए यह अत्यंत आवश्यक है ।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए गोंदिया हवाई अड्डे, महाराष्ट्र के बिरसी गांव के लगभग 800 निवासियों हेतु भाविप्रा द्वारा समुदायिक शौचालय ब्लॉक का निर्माण किया गया । इस परियोजना के अंतर्गत छह शौचालय तथा चार स्नानघर के दो शौचालय के ब्लॉक बनाए गए हैं । नियमित रखरखाव, सामुदायिक स्वामित्व तथा इस परियोजना की पोषणीयता को सुनिश्चित करने के लिए बिरसी ग्राम पंचायत को समझौता ज्ञापन के माध्यम से सौंपा इसे गया है ।

बिरसी गांव के सभी ग्रामीणों, महिलाओं तथा बच्चों को सम्मानपूर्ण जीवन सुनिश्चित करने की दिशा में यह पहल सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान का एक प्रयास है ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने पेक्योंग (सिक्किम) में हवाई अड्डे का निर्माण कार्य किया है जोकि सिक्किम राज्य की आर्थिक स्थिति तथा विकास में बढ़ावा देगा ।

पेक्योंग चिकित्सा केन्द्र :

पेक्योंग में स्थानीय समुदाय की आवयकताओं को ध्यान में रखते हुए पेक्योंग सामुदायिक स्वास्थ्य परियोजना बनाई गई । रु. 66 लाख की अनुमानित लागत से 24X7 चिकित्सा स्वास्थ्य केन्द्र का उद्घाटन 29 अक्तूबर, 2010 को श्री एन.एम.नांबियार, सचिव नागर विमानन ने श्रीमती कृष्णाअंबिका नांबियार, श्री वी.पी. अग्रवाल, अध्यक्ष, भाविप्रा तथा श्री अर्चना अग्रवाल, अध्यक्ष, कल्याणमयी के उपस्थिति में किया गया । इस कार्यक्रम में राज्य पर्यटन मंत्री श्री भीम डुनगुल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । डुप्लिकेशन को दूर करने तथा पोषणीयता को सुनिश्चित करने के लिए सिक्किम सरकार के चिकित्सा विभाग की वैकल्पिक सुविधाएं को फिर से न बनाकर विद्यमान चिकित्सा सुविधाओं को अपग्रेड किया गया । सिक्किम सरकार की भागीदारी से भाविप्रा ने विद्यमान प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को 24X7 सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्र में अपग्रेड किया ताकि समुदायों को संपूर्ण समय सेवाएं मिलती रहें । यह केन्द्र सिक्किम सरकार तथा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के संयुक्त उद्यम से चलाया जाएगा । समझौता ज्ञापन के अनुसार सिक्किम चिकित्सा तथा पराचिकित्साकर्मी उपलब्ध करवाएगा तथा भाविप्रा दवाईया देगा ।

2000 वर्गफुट क्षेत्र में निर्मित दो मंजिली स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण किया गया है । यह आवश्यक चिकित्सा उपकरणों जैसे अल्ट्रासाउण्ड, पल्स ओसीमेट्री, मल्टीपैरोमीटर मोनीटर, लारयेन्णेस्कोप, इनफ्यूशन पंप तथा अन्य आपातकालीन उपकरण जैसी सुविधाएं सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध हैं । पेक्यांग गावं की जनसंख्या के आस-पास 25 किलोमीटर में 100 छोटे उपग्रामों में स्वास्थ्य आवश्यकताओं को यह चिकित्सा केन्द्र पूरा करेगा । इसके अलावा समुदायों को सेवाओं के पैकेज, सुनिश्चित करने के लिए, प्राइवेट ड्रग पुर्नवास केन्द्र में रेफर्ड लिकेंज के विकास तथा मोबाइल चिकित्सा वैन उपलब्ध करवाने की दिशा पर कार्रवाई चल रही है ।

<u>लासिंग तथा डिक्लिंग गॉवों हेतु ग्रामीण जल आपूर्ति योजना</u>

पेक्यांग पर निर्माणाधीन हवाई अड्डे के सामने स्थित लोसिंग तथा डिक्लिंग गांव के निवासी पहले पास के स्थानीय झरने के स्रोत पीने का पानी का प्रबंध करते थे, जोकि अब भाविप्रा की चारदीवारी के भीतर आ गया है । इन गांव में पानी के स्रोत स्थायी नहीं हैं तथा सर्दी के मौसम के दौरान सूख जाते हैं । इन कारणों से निवासियों को पीने के जल की भारी कमी का सामना करना पड़ता है ।

निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के अंतर्गत ग्रामीण जलापूर्ति योजना के माध्यम से इन गांवों में पीने के पानी की समस्या का समाधान करने हेतु भाविप्रा आगे आया । इस योजना से रु.39.90 लाख की लागत से 2400 लोगों की जनसंख्या, डिक्लिंग उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा मठ को 30 वर्षों की अवधि हेतु पीने योग्य पानी उपलब्ध कराने हेतु बनाई गई है। क) सेजबोटे स्रोत ख) मडारी स्रोत तथा ग) उतिसे स्रोत नाम के तीन विभिन्न झरनों के स्रोतों की पहचान की गई ताकि गुरुत्वाकर्षण प्रवाह से आवश्यकता की पूर्ति हो सके । जलाशय, हैंड टैंक तथा जल वितरण टैंक के माध्यम से इन स्रोतों से पानी की आपूर्ति होती है ।

ग्रामीण जल आपूर्ति परियोजना का भी 29 अक्तूबर, 2010 को उद्घाटन किया गया । ग्रामीण जल आपूर्ति परियोजना में 10,000 लि. क्षमता के तीन टैंक, 5000 लि. के पाँच टैंक तथा 2000 लि. के दो टैंक शामिल हैं । हवाई अड्डे के पास के इन गांवों सहित बड़े क्षेत्र तक पीने योग्य पानी की आपूर्ति की कठिनाइयों को यह परियोजना दूर करेगी ।

पेक्यांग हवाई अड्डा सिक्किम सामाजिक कल्याण गतिविधियां

निशुल्क स्वास्थ्य जांच केन्द्र – 3 – स्लाइड शो

- उदघाटन
- पंजीकरण
- मुख्य अतिथि द्वारा कैंप का निरीक्षण

पर्यावरण

भारतीय विमानपत्त न प्राधिकरण कागज पुनर्चक्रण इकाई

पेपर एक ऐसा सामान है जो हमारे प्रतिदिन के कार्यों से बहुत नजदीक से जुडा है तथा हमारे दैनिक कार्यों में कागज का प्रयोग अनिवार्य बना रहता है । औद्योगीकरण, आर्थिक वृद्धि एवं साक्षरता आदि में हो रही बढ़ोत्तारी के साथ प्रति व्यकक्ति कागज की खपत में प्रति वर्ष वृद्धि हो रही है । इसलिए कागज का पुनर्चक्रण एवं पुन: प्रयोग भी अत्यंत महत्वापूर्ण हो जाता है ।

सार्थक ढंग से पर्यावरण संरक्षण एवं विकास को बनाए रखने में योगदान प्रदान करने के लिए पुनर्चक्रित कागज के प्रयोग को बढ़ावा देने में कारपोरेट जगत को प्रमुख भूमिका निभानी है । भारतीय विमानपत्तयन प्राधिकरण ने अपनी बहुत सारी सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यरम से हवाईअड्डों के आस-पास रहने वाले लोगों की जिन्दिगी को सुधारने में महत्वलपूर्ण भूमिका निभाई है । "हम जहां रहते व कार्य करते हैं उस समुदाय को बदले में कुछ देना, समुदायों के सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता" वह संदेश है जिसे भाविप्रा की सी एस आर नीति के प्रमुख उद्देश्यय के रूप में सभी लोगों को भेजा गया । दिल्ली में कागज पुनर्चक्रण इकाई की स्थामपना भाविप्रा की पहली ऐसी सी एस आर परियोजना थी जिसकी शुरूआत भारतीय विमानपत्तसन प्राधिकरण महिला कल्याण संघ, कल्याणमयी की अध्यपक्षा श्रीमती अर्चना अग्रवाल के दिशा-निर्देश में कल्या णमयी के टीम सदस्योंल की पहल पर की गई । इस कागज पुनर्चक्रण इकाई का उद्घाटन भाविप्रा के अध्ययक्ष श्री वी.पी. अग्रवाल एवं भाविप्रा महिला कल्याण संघ कल्याणमयी की अध्यइक्ष श्रीमती अर्चना अग्रवाल द्वारा दिनांक 2 अक्टू बर, 2009 को किया गया । भाविप्रा 'ग्रो' को समर्थन देने हेतु इस कागज पुनर्चक्रण इकाई की स्थामपना करने वाला भारत का पहला सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम बना ।

भाविप्रा की सी एस आर परियोजनाओं के उद्देश्य हैं- कुल मिलाकर सामाजिक एवं आर्थिक रूप से हाशिए पर पड़े हुए समुदायों एवं समाज के वंचित वर्गों के विकास के लिए गतिविधियों का संचालन करना तथा सदस्यों एवं उनके परिवार के लोगों के लाभ के लिए सामाजिक, सांसकृतिक एवं शैक्षिक गतिविधियों का संचालन करना । कागज पुनर्चक्रण इकाई 21 लोगों को रोजगार उपलब्धो करा रही है । इस इकाई में कार्यरत अधिकांश श्रमिक ऐसे लोग हैं जो पहले भाविप्रा की तत्कारलीन आवासीय कालोनी महिपालपुर नई दिल्लीब में धोबी, घरेलू नौकर आदि के रूप में कार्य कर रहे थे तथा इस आवासीय कालोनी को डायल द्वारा ग्रहण कर लिए जाने के बाद उन्हेंप वहां से हटा दिया गया था । हम लोग उन्हें इस इकाई में ले आए उनहें कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया और उन्हेंब उनकी प्रतिष्ठा वापस दी ।

वर्तमान में क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक (उ.क्षे.) के अधीन नई दिल्ली में स्था पित एवं कार्यरत यह भाविप्रा कागज पुनर्चक्रण इकाई भाविप्रा की प्रमुख निगमित सामाजिक उत्त रदायित्वश परियोजनाओं में से एक है तथा यह व्यांपार प्रक्रियाओं एवं सी एस आर को एकीकृत करने वाली सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में मध्य एक उदाहरण योग्यय परियोजना है ।

आवश्यकता आधारित सामुदायिक कार्यक्रम

सामुदायिक विकास व्यावसायिक लक्ष्यों से निकटता से जुड़ा हुआ है

त्रिवेन्द्रम विमानपत्तन, केरल के निकट स्थानीय मछली बाजार के लिए बेहतर सुविधा

त्रिवेन्द्रम विमानपत्तन के पेरुनेल्ली जंक्शन का खुला मछली बाजार बिखरे हुए असंगठित रूप से कार्य करता है जहां मछलियों का अपशिष्ट खुले में ही बिखरा रहता है जो न केवल अस्वच्छ बल्कि पर्यावरण के भी प्रतिकूल है जिससे विमानपत्तन के आसपास पक्षियों का खतरा होने से विमान प्रचालन में पक्षियों के टकराने का संभावित खतरा पैदा हो जाता है।

भा वि प्रा ने इस बाजार के लिए परिसर दीवार , छत एवं शौचालयों का निर्माण कार्य शुरू किया है । इस परियोजना से न केवल विमान प्रचालन में पक्षियों के टकराने का खतरा कम हुआ है बल्कि इससे सौ से भी अधिक सब्जी एवं मछली विक्रेता भी अपने व्यवसाय को बेहतर कार्य स्थितियों जैसे कि पेयजल एवं शौचालयों की सुविधा , अपशिष्ट प्रबंधन सुविधा एवं पंखों तथा विद्युत उपकरणों की बिजली के लिए बायो गैस प्लांट इत्यादि से संचालित करने हेतु लाभान्वित हुए हैं। बायो गैस प्लांट के द्वारा बिजली कनैक्शन की सुविधा से बाजार के कार्य समय में वृद्धि हुई है जिससे इन व्यवसायियों के जीवनस्तर पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है। इस परियोजना पर कुल 48.50 लाख रुपए खर्च किए गए हैं ।

आवश्यकता आधारित सामुदायिक विकास परियोजनाएं

यह परियोजना पेकयोंग, सिक्किम में भावी ग्रीनफ़ील्ड विमानपत्तन के विकास से प्रभावित स्थानीय समाज की आवश्यकताओं के समाधान के लिए भा वि प्रा की सी एस आर योजना के निर्देशन में विकसित की गयी है जिसके निम्न दो मुख्य घटक हैं । पेकयोंग का स्वास्थ्य केंद्र जो कि पेकयोंग के आसपास 25 किलोमीटर तक रहने वाले लगभग 14000 स्थानीय निवासियों को आपातकालीन स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाएँ तथा 24x7 आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करता है। ग्रामीण जलापूर्ति परियोजना जो विगत 30 वर्षों से दूर दराज बसे लगभग 2400 लोगों की पेयजल की सुविधा की पूर्ति करता है।

इस परियोजना की परिकल्पना नए विमानपत्तन का निर्माण कार्य प्रारम्भ करते समय स्थानीय निवासियों के लिए स्वास्थ्य सुविधायों के आभाव को ध्यान में रखकर की गयी थी। इसके अतिरिक्त पेकयोंग में नए विमानपत्तन के निर्माण के दौरान स्थानीय निवासियों के लिए पेयजल सुविधा पर होने वाले दुष्प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण जलापूर्ति परियोजना की आवश्यकता महसूस की गई ।

भा वि प्रा की यह अद्‌वितीय निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व परियोजना सतत एवं अनुकरणीय है जो स्थानीय निवासियों की आवश्यकतायो के समाधान के लिए सार्वजनिक-सार्वजनिक साझेदारी का आदर्श प्रस्तुत करता है। पेकयोंग स्वास्थ्य केंद्र को अक्तूबर 2011 में विमानन क्षेत्र में 12वें वार्षिक ग्रीनटेक सी एस आर स्वर्ण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

<u>आपदा प्रबंधन</u>

<u>राहत एवं पुनर्वास - उत्तराखंड बाढ़</u>

उत्तराखंड राज्य में हुई प्राकृतिक आपदा के राहत कार्यों के संचालन में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने उत्तराखंड की राज्य सरकार एवं भारतीय वायुसेना के बीच उत्कृष्ट समन्वय स्थापित करते हुए जॉली ग्रांट विमानतल से रात-दिन हेलिकॉप्टरों , विमानों के निर्बाध प्रवाह एवं ग्राउंड ऑपरेशन की सुविधा को बनाए रखा। भा वि प्रा द्‌वारा बाढ़पीडितों को आपातकालीन सुविधाएं उपलब्ध करवाने एवं यात्रियों , उनके सगे संबंधियों तथा शुभ चिंतकों को हर संभव सहायता और सहयोग देने के लिए विमानतल पर राहत सहायता शिविर की स्थापना की । इन अस्थाई सहायता शिवरों में 8 सीटों वाली दस चल शौचालय वाहन , 6 टेलीफ़ोन कनैक्शन , चिकित्सक दल के साथ दो एंबुलेंस , पेयजल एवं भोजन सुविधा की व्योवस्था की गई। भा वि प्रा द्‌वारा बाढ़ राहत हेतु इस विमानतल से होने वाले विमान प्रचालन के लिए विमान लैंडिंग-पार्किंग शुल्क पूरा माफ कर दिया।

भा वि प्रा के कर्मियों ने प्रधानमंत्री राहत कोष में एक दिन के वेतन का योगदान दिया। बाढ़ प्रभावित राज्य के तबाह हुए कस्बों एवं गावों में राहत कार्यों के संचालन हेतु भा वि प्रा द्‌वारा प्रधानमंत्री राहत कोष में रुपए 3.20 करोड़ की राशि का चेक अनुदान स्वरूप जमा किया गया। इसके अतिरिक्त भा वि प्रा उत्तराखंड में हुए इस प्राकृतिक आपदा से सर्वाधिक प्रभावित एक गाँव को अपनाकर उसके पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण की योजना भी बना रही है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को सतत रणनीतियों के विकास के लिए एशिया के तीसरे सर्वोतम निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व सम्मान, 2013 "तीसरा एशिया का सर्वोत्तम सी एस आर प्रेक्टिस अवार्ड",2013 से सम्मानित किया गया।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (भा वि प्रा) को वर्ष 2013 के लिए सतत रणनीतियों के विकास की श्रेणी एशिया के तीसरे सर्वोतम निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व सम्मान प्रदान किया गया। पैन पैसिफिक , सिंगापुर में 1 अगस्तक 2013 को आयोजित एक भव्य समारोह में भा वि प्रा की ओर से श्री मनोज कुमार , सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन) द्‌वारा यह सम्मान ग्रहण किया गया। इस सम्मान द्‌वारा भा वि प्रा को अपने समस्त संगठन में पर्यावरण इको-फ्रेंडली दस्तकारी से पुनर्निर्मित कागज़ एवं कागज़ उत्पादों के प्रयोग की एकीकृत पहल के रूप में पहचान दी गयी। दस्तकारी से पुनर्निर्मित इस कागज़ एवं कागज़ उत्पादों का उत्पादन भा वि प्रा द्‌वारा स्थापित कागज़ पुनर्निर्माण इकाई में ही किया जा रहा है।

एशिया के सर्वोच्च सम्मानों में से उन निगमित संगठनों के लिए यह सम्मान एक सर्वोच्च सम्मान है जो संगठन अपने निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रमों के द्‌वारा अपने आसपास के लोगों के जीवन पर सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव छोडते हैं जिससे उस समाज , पर्यावरण एवं लोगों के प्रति उस संगठन की प्रतिबद्धता प्रतिबिम्बित होती है। भा वि प्रा को यह पुरस्कार पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में अभिनव एवं सफल कार्य निष्पादन के परिणामस्वरूप प्राप्तन हुआ।

पुनर्निर्मित कागज़ एवं कागज़ उत्पादों के प्रयोग से संगठन की निगमित संस्कृति में संसाधनो के न्यूनीकरण को बढ़ावा देने एवं अपशिष्ट /व्यर्थ कागज़ के पुनः प्रयोग को बढ़ावा मिलने से अर्थपूर्ण तरीके से पर्यावरण सरंक्षण के क्षेत्र में योगदान दिया जा रहा है। पर्यावरण सरंक्षण के क्षेत्र में बेहतर प्रथाओं को बढ़ावा देने की संकल्पना से प्रेरित होकर भा वि प्रा द्‌वारा वर्ष 2009 में यह अद्‌वितीय पहल की गयी। श्रीमति अर्चना अग्रवाल, अध्यक्ष कल्याणमयी द्‌वारा इस परियोजना को प्रारम्भ करने का बीड़ा उठाया , जिन्होंने इस कागज़ पुनर्निर्माण इकाई के स्थापन एवं संचालन में अभूतपूर्व योगदान दिया।

इस कागज़ पुनर्निर्माण इकाई के स्थापन से भा वि प्रा भारत का एकमात्र सार्वजनिक क्षेत्रीय उपक्रम है जिसने सरकारी कार्यालयी अपशिष्ट के पुनर्निर्माण की संकल्पना का समर्थन किया। यह कागज़ पुनर्निर्माण इकाई देशव्यापी भा वि प्रा के कार्यालयों से अपशिष्ट/व्यर्थ पेपर एकत्रित कर उपयोगी कागज़ के रूप में परिवर्तित कर विभिन्न लेखन सामग्री जैसे फ़ाइल कवर , फ़ाइल फोल्डर, विजिटिंग कार्ड, लिफाफे, लेटर हैड, निगमित उपहार, कलेंडर एवं अन्य कागज़ उत्पादों का निर्माण करती है। विगत में अपशिष्ट कागज़ बेच या फैंक दिया जाता था परंतु अब यह कागज़ पुनर्निर्माण इकाई भा वि प्रा के देशव्यापी कार्यालयों की लेखन सामग्री आवश्यकतायो को पूरा कर रही है।

भा वि प्रा इस संदेश के प्रसार हेतु प्रतिबद्ध है कि किस प्रकार हम अपने दैनिक जीवन में पुनर्निरमित कागज़ के प्रयोग को बढ़ावा देकर पर्यावरण में स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को "गोल्डेन पीकॉक इको-इनोवेशन अवार्ड", 2012

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (भा वि प्रा) ने वर्ष 2012 का स्वर्ण मयूर पर्यावरण नवीनता पुरस्कार जीता। भा वि प्रा के सम्पूर्ण कार्यालयों में पुनर्निमित दस्तीकृत कागज़ एवं लेखन सामग्री के एकीकृत उपयोग की अभिनव पहल के लिए श्री वी पी अग्रवाल , अध्यक्ष, भा वि प्रा द्वारा शनिवार, जुलाई 07, 2012 को दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री जी के करकमलों से यह पुरस्कार ग्रहण किया गया । पुनर्निमित दस्तीकृत कागज़ एवं लेखन सामग्री भा वि प्रा की कागज़ पुनर्निर्माण इकाई द्वारा निर्मित की जाती है। स्वर्ण मयूर पर्यावरण नवीनता पुरस्कार एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है जो प्रतिवर्ष उस अभिनव उत्पाद को दिया जाता है जिसका चयन समाज के सतत विकास के लक्ष्य के संगत अत्यंत मितव्यतता से ग्राहकों की दीर्घावधि आवश्यक्तानओं एवं आकांक्षायों की संतुष्टि के आधार पर किया जाता है। भा वि प्रा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अपने इस इस उत्कृ ष्ट एवं अभिनव कार्य के परिणामस्वरूप प्रतिष्ठित स्वर्ण मयूर पर्यावरण नवीनता पुरस्कार पाकर अत्यंत गौरान्वित हुआ।

पुनर्निर्मित कागज़ एवं कागज़ उत्पादों के प्रयोग से संगठन की निगमित संस्कृति में संसाधनो के न्यूनीकरण को बढ़ावा देने एवं अपशिष्ट /व्यर्थ कागज़ के पुनः प्रयोग रूपी परिवर्तनों को बढ़ावा मिलने से अर्थपूर्ण तरीके से पर्यावरण सरंक्षण के क्षेत्र में योगदान दिया जा रहा है। पर्यावरण सरंक्षण के क्षेत्र में बेहतर प्रथाओं को बढ़ावा देने की संकल्पना से प्रेरित होकर भा वि प्रा द्वारा कल्याणमयी- महिला कल्याण संस्था- के सहयोग से वर्ष 2009 में यह अद्वितीय पहल की गयी। श्रीमती अर्चना अग्रवाल , अध्यक्ष कल्याणमयी द्वारा इस परियोजना को प्रारम्भ करने का बीड़ा उठाया, जिन्होंने इस कागज़ पुनर्निर्माण इकाई के स्थापन एवं संचालन में अभूतपूर्व योगदान दिया। श्रीमति अर्चना अग्रवाल , अध्यक्ष कल्याणमयी द्वारा नई दिल्ली में इस परियोजना को प्रारम्भ करने का बीड़ा उठाया और इस कागज़ पुनर्निर्माण इकाई के स्थापन एवं संचालन में उनका अभूतपूर्व योगदान रहा।

इस कागज़ पुनर्निर्माण इकाई के स्थापन से भा वि प्रा ही भारत का एकमात्र सार्वजनिक क्षेत्रीय उपक्रम है जिसने सरकारी कार्यालयी अपशिष्ट के पुनर्निर्माण की संकल्पना का समर्थन किया। यह कागज़ पुनर्निर्माण इकाई देशव्यापी भा वि प्रा के कार्यालयों से अपशिष्ट/व्यर्थ पेपर एकत्रित कर उपयोगी कागज़ के रूप में परिवर्तित कर विभिन्न लेखन सामग्री जैसे फ़ाइल कवर , फ़ाइल फोल्डर , विजिटिंग कार्ड , लिफाफे, लेटर हैड , निगमित उपहार, कलेंडर एवं अन्य कागज़ उत्पादों का निर्माण करती है। विगत में अपशिष्ट कागज़ बेच या फेंक दिया जाता था परंतु अब यह कागज़ पुनर्निर्माण इकाई भा वि प्रा के देशव्यापी कार्यालयों की लेखन सामग्री आवश्यक्ताअओं को पूरा कर रही है।

पेपर हमारे दैनिक प्रयोग से जुड़ी एक अनिवार्य वस्तु है जिसका प्रयोग हमारे दिन प्रतिदिन के कार्यों में अपरिहार्य रहेगा। भा वि प्रा गहन अनुसंधान एवं विकास के उपरांत स्थायी तरीके से कागज़ के पुनरूपयोग की यह धारणा बना सका जो अन्य निगमों द्वारा भी अपनायी जा सकती है। इस पहल में तकनीकी/वाणिज्यिक अनुप्रोयोग हेतु विशिष्ट पेपर एवं उत्पादों की पर्यावरण अनुकूल उत्पादन की विशेषताएँ निहित हैं। यह तकनीक पुनरुत्पादन की मूल्य संवर्धन एवं निर्माण तकनीक को नया स्वरूप देने के अवसर प्रदान करती है।

कागज़ पुनर्निर्माण इकाई अपशिष्ट से ऊर्जा प्रणाली के व्यवहारिक आधार पर कार्य करती है। कागज़ पुनर्निर्माण की मुख्य विशेषताएँ : ऊर्जा संरक्षण, पुनरुत्पाद/रिसाइकिलिंग द्वारा अपशिष्ट का संपति में परिवर्तन , प्रदूषण रहित एवं पर्यावरण अनुकूल तैयार उत्पाद (पुनरुत्पादित कागज क्लोरीन मुक्त होता है जिस पर स्याही या रंग नहीं फैलता और यह पुनः प्रयोग में कुशल होता है।) और इसमे निगमित लेखन सामग्री की अनगिनत व्यक्तिगत किस्में तैयार की जा सकती हैं।

भा वि प्रा इस संदेश के प्रसार हेतु निरंतर प्रतिबद्ध है कि किस प्रकार हम अपने दैनिक जीवन में पुनर्निरमित कागज़ के प्रयोग को बढ़ावा देकर पर्यावरण में स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं ।

भारतीय विमानपत्तान प्राधिकरण ने जीता टाइम्स आफ इंडिया एवं टेफलास 'फ्रेम सी एस आर अवार्ड, 2012'

भारतीय विमानपत्तान प्राधिकरण (भाविप्रा) ने वर्ष 2012 के लिए टाइम्सि आफ इंडिया एवं टेफलास 'फ्रेम सी एस आर अवार्ड' जीता है । यह अवार्ड शनिवार दिनांक 25 अगस्ती, 2012 को भुवनेश्वजर में उड़ीसा के माननीय मुख्यवमंत्री से प्राप्तस किया गया । यह अवार्ड भाविप्रा को अपने सम्पूडर्ण संगठन के अंदर पारिस्थितिकी अनुकूल हाथ की कारीगरी से पुनर्चक्रित कागज एवं कागज उत्पा़दों के एकीकृत प्रयोग के नवोन्मेरषी पहल हेतु प्राप्तप हुआ । हैन्डाक्राफ्टेड पुनर्चक्रित कागज एवं कागज उत्पाकद भाविप्रा की कागज पुनर्चक्रण एवं लेखन सामग्री इकाई में बनाए जाते हैं ।

टाइम्स् आफ इंडिया, फ्रेम सी एस आर एवं एवं टेफला ने फ्रेम सी एस आर अवार्ड को स्था़पित करने की पहल की है । उनके इस प्रयास के पीछे वर्ष 2010/2011 में कंपनियों द्वारा लागू किए गए उत्कृष्टर, नवोन्मेिषी एवं विश्वैस्तसरीय उत्पा़दों, सेवाओं, परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों के लिए उन्हें् मान्य ता व सम्मांन प्रदान करने की भावना निहित है । भाविप्रा इस अवार्ड के लिए मान्यीता प्राप्तत होने पर गौरवान्वित है । हमें यह अवार्ड पर्यावरण प्रबंधन में उत्कृतष्टदता के क्षेत्र में नवोन्मेषी एवं सफलतापूर्वक किए गए कार्य के परिणामस्वररूप प्राप्तन हुआ है ।

पुनर्चक्रित कागजों के प्रयोग से संगठन के भीतर कारपोरेट संस्कृति में एक परिवर्तन आया है । इसने रद्दी कागज को पुन: प्रयोग में लाने की भावना मन में बिठाई है तथा उसे प्रोत्साहित किया है तथा सार्थक रूप से पर्यावरण संरक्षण में योगदान प्रदान किया है ।

पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहतर प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने की अवधारणा से प्रेरित होकर के भाविप्रा ने अपने महिला कल्याण संघ, कल्याणमयी के सहयोग से 2009 में इस अनोखी पहल का सूत्रपात किया । श्रीमती अर्चना अग्रवाल, अध्यक्ष, कल्याणमयी ने इस परियोजना को प्रारम्भ करने में अग्रणी भूमिका निभाई तथा नई दिल्ली में इस कागज पुनर्चक्रीकरण इकाई की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया ।

इस कागज पुनर्चक्रीकरण इकाई की स्थापना करके 'ग्रो' को समर्थन प्रदान करने वाला भाविप्रा भारत का पहला सार्वजकिनक क्षेत्र उपक्रम बन गया । यह कागज पुनर्चक्रीकरण इकाई पूरे देश के भाविप्रा के कार्यालयों से प्राप्त रद्दी पेपरों को उपयोगी कागज लेखन सामग्री उत्पदों जैसे कि फाइल कवर, फाइल फोल्डर, विजिटिंग कार्ड, लिफाफे, पत्र-शीर्ष, कारपोरेट उपहार, कैलेन्डर एवं अन्य कई और कागज उत्पादों में रूपांतरित करता है । पहले इन रद्दी कागजों को या तो फेंक दिया जाता था या फिर बेंच दिया जाता था । अब ये कागज पुनर्चक्रीकरण इकाई पूरे भारत में स्थत भाविप्रा के कार्यालयों की कागज लेखन सामग्री की आवश्यकताओं को पूरी करती है ।

कागज एक ऐसा सामान है जो हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी से बहुत नजदीक से जुड़ी हुई है तथा हमारे दैनिक जीवन में नजदीक से जुडी हुई तथा हमारे दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता की अनिवार्यता बनी रहती है । भाविप्रा ने अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में इष्टतम प्रयास किए और कागज का व्यावहारिक ढंग से पुन: प्रयोग में लाने की अस अवधारणा को विकसित किया । यह दूसरे कारपोरेट के लिए प्रेरणा बन सकता है कि वे भी इसे अपनाएं । तकनीकी एवं वाणिज्यिक एप्लीकेशनों के लिए विशेष कागजों एंव उत्पादों को बनाने हेतु इसमें पारिस्थितिकी अनुकूल फीचर भी सन्निहित है । इस तकनीकी में रिसाइकिलिंग एवं उन्नत उत्पादन तकनीकी के वैल्यू एडीसन की प्रणाली को पुन: डिजाइन करने की खूबी भी विद्यमान है ।

इस कागज पुनर्चक्रीकरण इकाई परियोजना व्यवहार्य वेस्ट टू एनर्जी प्रणाली के आधार पर कार्य करती है । कागज पुनर्चक्ररण इकाई की मुख्य विशेषताएँ हैं: ऊर्जा संरक्षण, री-क्राफ्टिंग/रिसाइकिलिंग के माध्यम से रद्दी का सम्पत्ति में रूपांतरण, प्रदूषण मुक्त एवं पारिस्थितिकी अनुकूल अंतिम वस्तुएँ (पुनर्चक्रित कागज क्लोरिन रहित होते है, इसमें दि. इंकिंग नहीं होती, रंग नहीं होता, पुन: प्रयोग हेतु सक्षम होते हैं) तथा कारपोरेट लेखन सामग्री के लिए असंख्य वैयक्तिक विशेषताएँ ।

भाविप्रा इस संदेश के प्रचार-प्रसार को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है कि हम किस प्रकार से अपने रोजमर्रा की जिंदगी में पुनर्चक्रित कागजों के प्रयोग पर बारीकी से ध्यान दे सकते हैं तथा पर्यावरण के क्षेत्र में उत्तरदायी एवं स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं ।

कौशल विकास

जयपुर की वंचित महिलाओं हेतु 'आशा' कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

जयपुर एयरपोर्ट के निकट 'सांगानेर' क्षेत्र में रह रहीं बेरोजगार महिलाओं के लिए भाविप्रा ने 2012 में 6 महीनों के कौशल विकास कार्यक्रम की शुरुआत की है। यह कार्यक्रम 16 समूहों में 180 महिलाओं को कटाई एवं सिलाई , नर्म खिलौने बनाने तथा बांधनी में प्रशिक्षित करता है। प्रशिक्षण के बेहतर अवसरों प्रदान करने हेतु इस परियोजना को समुदाय के भीतर स्थित केंद्र में , जहां लाभार्थी रह रहे हैं, क्रियान्वित किया गया है। इस पहल ने न केवल समुदाय की बेरोजगार महिलाओं हेतु लाभकारी रोजगार के लिए नए अवसर खोले हैं बल्कि साथ ही सामूहिकरण द्वारा सशक्तिकरण के नए अवसर भी खोले हैं।

वंचित युवकों हेतु कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम 'युवा स्टार'

एनआईआईटी फ़ाउंडेशन के साथ भागीदारी में भाविप्रा ने अत्याधुनिक करियर विकास केंद्र की शुरुआत की है। यह केंद्र प्रति वर्ष एयरपोर्ट के नजदीक रह रहे समाज के पिछड़े/वंचित तबकों के 500 से ज़्यादा युवाओं को रोजगार संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

यह कैरियर विकास केंद्र छोटी अवधि के कोर्स प्रदान करता है जैसे कि सर्विस इंडस्ट्री सर्टिफिकेशन(एसआईसी) कार्यक्रम तथा सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट में प्रशिक्षण कार्यक्रम ताकि युवाओं के कौशल को उन्नयित कर उन्हे रोजगार के अवसर प्रदान किए जा सकें। अब तक 300 से ज़्यादा युवा शिक्षार्थियों को इस परियोजना द्वारा प्रशिक्षित किया जा चुका है जिसमें से 7 शिक्षार्थियों को विभिन्न रोजगार दिये गए हैं।

यह एक प्रमाणित तथ्य है कि भारतीय श्रमशक्ति के बड़े अंग को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए रोजगार योग्य कौशल एवं रोजगार के अवसर की आवश्यकता है। इस परिप्रेक्ष्य् में भाविप्रा इस सीएसआर पहल के द्वारा एयरपोर्ट के नजदीक रह रहे वंचित/पिछड़े युवाओं के रोजगार के अवसरों में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उपलब्ध पाठ्यक्रम: भविष्ये विकास केंद्र रोजगारोन्मुरख पाठ्यक्रम संचालित करता है। ये पाठ्यक्रम छात्रों को नया कौशल सीखने एवं उनके मौजूदा कौशल को बढ़ाने में सहायता प्रदान करते हैं । इनका उद्देश्यम कम समय में छात्रों को रोजगार हेतु तैयार करना होता है । पात्र छात्राओं को यहॉ रोजगार सहायता उपलब्धा कराई जाती है । इसके अलावा भाविप्रा के विद्यालयों के छात्रों को गैर-रोजगार केंद्रित पाठ्यक्रमों जैसे कि बुनियादी आई टी एवं अंग्रेजी में प्रशिक्षित किया जाता है ।